1. यह काव्य प्रधानतः लोकमंगल और सामाजिक मर्यादा का काव्य है ।
2. इस धारा के प्रमुख कवि तुलसीदास ने अपने काव्य में प्रचलित प्रायः सभी काव्य रूपों, छन्दों और लोकगीतों के रूपों का प्रयोग किया है।
3. रामभक्ति काव्य में वैष्णव और शैव सम्प्रदायों में सामंजस्य लाने का प्रयास मिलता है ।
4. रामभक्तों के आराध्य देव राम विष्णु के अवतार हैं और परम ब्रह्म हैं । राम में शक्ति, शील और सौन्दर्य का सुन्दर समन्वय है ।
5. इस धारा के कवियों ने अवधी और ब्रज दोनों ही भाषाओं का प्रयोग किया है ।

प्रमुख कवि : तुलसीदास, नाभादास, प्राणचन्द चौहान, हृदयराम, अग्रदास और बाल आली आदि ।

(ख) कृष्ण भक्ति शाखा : कृष्ण भक्ति शाखा के प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभाचार्य थे । आचार्य वल्लभ ने कृष्ण को ही परब्रह्म पुरुषोत्तम कहा है । कृष्ण भक्त कवियों ने भगवान के लीलामय मधुर रूप का वर्णन किया है।

विशेषताएँ :

1. साकार ब्रह्म की उपासना ।
2. ब्रह्म के लोक रक्षक एवं लोक रंजक रूप की स्थापना ।
3. रहस्यवादी कविता का प्रारम्भ ।
4. व्यक्तिगत साधना और लोकसाधना का महत्व ।
5. प्रबन्ध, मुक्तक तथा खण्ड काव्य की रचना हुई ।
6. ब्रज और अवधी दोनों भाषा में काव्य रचना ।

प्रमुख कवि : सूरदास, कुंभनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, नन्ददास, मीरा, रसखान आदि ।

2. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)

रीतिकाल का युग सामन्तों राजाओं का युग था। इस काल के अधिकांश कवि राजाश्रित थे। उनकी रचनाओं की प्रमुख प्रवृत्ति रीति निरूपण और श्रृंगार थी। रीतिकाल के कवियों ने प्रायः काव्यशास्त्र के लक्षणों को समझाने के लिए काव्य रचना की । उन्होंने रस, छन्द, अलंकार आदि का विवेचन करने वाले जो ग्रन्थ लिखे, उन्हें रीतिग्रन्थ कहा जाता है। ऐसे रीतिग्रन्थों की अधिकता के कारण ही इस युग को रीतिकाल कहा गया है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रन्थ में इस काल को उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल नाम दिया है । उनके इस नामकरण के विकल्प में विद्वानों ने श्रृंगार काल, अलंकृत काल, काव्यकला काल और रीति श्रृंगार काल जैसे नाम प्रस्तावित किए, किन्तु इनमें से कोई भी नाम शुक्ल जी के रीतिकाल नाम के समान अपनी सार्थकता सिद्ध न कर सकने के कारण विद्वानों में स्वीकार्य नहीं हो सका । रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि केशव, भूषण, पद्माकर, बिहारी और बोधा का सम्बन्ध मध्यप्रदेश से रहा है। इन कवियों के बगैर रीतिकाल अधूरा सा लगता है। इसीलिए रीतिकाल को मध्यप्रदेश की देन कहा जाता है।

अधिकांश कवियों ने काव्य रीतियों का पालन करते हुए अनेकानेक ग्रन्थों की रचना की कवियों की यह धारा इसलिए रीतिबद्ध धारा कही गयी । इस धारा के कवियों में केशव, सेनापति, देव, भूषण, पदमाकर मतिराम आदि हैं । इस

Date __/__/____

Saathi

कक्षा 9 Th 10 Th
विषय - हिन्दी व्याकरण
अध्याय - 1 हिन्दी साहित्य का इतिहास

2. **मध्यकाल:** मध्यकाल को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल। पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल ~~तथा उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल~~ कहा जाता है। संवत् 1375 से 1700 तक का समय भक्तिकाल कहा जाता है। इस काल में भक्ति की प्रधानता थी। इस समय सीमा में कवि भक्त थे, अतः उनकी रचनाएँ तत्कालीन शासन के असहिष्णुता के कारण भक्ति से ओत-प्रोत थीं। सामाजिक परिस्थितियों के कारण समाज में ऊँच-नीच का भेद अधिक था तथा शासकों और आम जनता के मध्य धार्मिक परिस्थितियाँ विपरीत थीं। अतः भक्ति का स्रोत इस काल में प्रस्फुटित हुआ। इस काल में धर्म साधना का नहीं भावना का विषय बन गया। भक्त कवियों में हिन्दू जन-जीवन को भक्ति का अमृत पिलाने के लिए भक्तिकाल की धारा प्रवाहित की। इन भक्त कवियों को धन, यश और राजाश्रय की चाह नहीं थी बल्कि समाज, व्यक्ति तथा राष्ट्र को आगे बढ़ाने की भावना थीं। यह भक्ति आंदोलन अखिल भारतीय था, इसका परिणाम यह हुआ कि लगभग पूरे देश में मध्यदेश की काव्य भाषा ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा का प्रचार-प्रसार हुआ। भक्ति काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम काल माना जाता है।

भक्तिकाल की समय सीमा में दो प्रकार की (Black) काव्यधाराएँ थीं:-

1. निर्गुण धारा
2. सगुण धारा

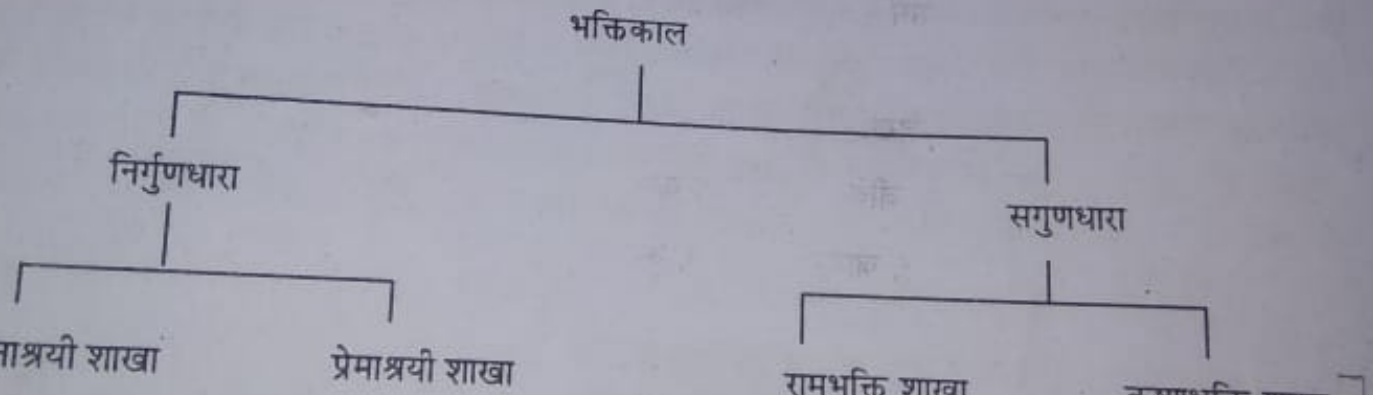

1. **निर्गुण धारा :**

निर्गुण पंथी कवियों ने निराकार ब्रह्म की उपासना पर जोर दिया। उन्होंने योग साधना और ब्रह्म ज्ञान को अपनी तियों में प्रधानता दी। धार्मिक उन्माद और आडम्बर का विरोध कर उन्होंने मन की पवित्रता, सदाचार और समता पर बल या था।

2019-20

Date ___/___/___

कक्षा - 9 Th 10 Th

विषय हिन्दी व्याकरण

अध्याय - 1 हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न (1) मध्यकाल को और किस नाम से जाना जाता है?

प्रश्न (2) भक्तिकाल की कौन सी प्रमुख काव्यधाराएँ थी?

प्रश्न (3) कृष्ण भक्ति शाखा और राम भक्ति शाखा में अन्तर बताइए?

प्रश्न (4) निर्गुण भक्तिकाव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए:-

निर्गुणधारा की दो शाखाएँ हैं :

(क) ज्ञानाश्रयी शाखा (ख) प्रेमाश्रयी शाखा

(क) ज्ञानाश्रयी शाखा : इस शाखा के सभी कवि सन्त कहलाए। सभी ने ज्ञान की चर्चा की। सन्तों ने जाति-पाँति को तिलांजलि देकर सबके लिए भक्ति का मार्ग खोल दिया।

विशेषताएँ :

1. सभी कवि निर्गुणोपासक होने के कारण नाम की उपासना पर अधिक जोर देते थे।
2. गुरु को भगवान से भी अधिक मानते थे।
3. धर्म के आडम्बरों का खण्डन करते थे।
4. सदाचार और साधना के अनुयायी थे।
5. जाति- पाँति के बन्धन को नहीं मानते थे।
6. भाषा साहित्यिक न होकर सधुक्कड़ी थी।

प्रमुख कवि : इस शाखा के प्रमुख कवि कबीर, रैदास, धर्मदास, गुरुनानक, दादूदयाल, सुन्दरदास और मलूकदास आदि हैं।

(ख) प्रेमाश्रयी शाखा : प्रेमाश्रयी शाखा के कवि सूफी थे। इस शाखा के कवियों के कथनानुसार मुक्ति प्रेम द्वारा मिलती है। प्रेम की साधना के लिए गुरु का सहयोग अनिवार्य है। 'सूफी' शब्द की उत्पत्ति 'सोफिया' अथवा 'सफा' शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है क्रमशः ज्ञान अथवा शुद्ध एवं पवित्र। एक अन्य मत के अनुसार सूफी शब्द का सम्बन्ध 'सूफ' से है जिसका अर्थ है ऊन। सूफी लोग सफेद ऊन से बने हुए चोगे पहनते थे। उनका आचरण शुद्ध होता था।

विशेषताएँ :

1. सूफी प्रेमाश्रयी शाखा का काव्य, प्रेम की पीर की व्यंजना का काव्य है।
2. प्रेमाश्रयी सूफी काव्य, प्रबन्धात्मक है, मुक्तक नहीं।
3. इनकी भाषा अवधी है। जिसमें काव्य ग्रन्थ के प्रणयन के पूर्व ईश्वर की उपासना की जाती है। मसनवी शैली का प्रयोग किया है।
4. यह काव्य दोहा, चौपाई में लिखा गया है।
5. इन कवियों ने भारतीय लोक जीवन में प्रचलित कथाओं को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है।

प्रमुख कवि : कुतुबन, मंझन, जायसी, उसमान, कासिम, नूर-मोहम्मद और फाजिल शाह आदि।

2. सगुण धारा

सगुण धारा के उपासकों का अवतार और लीला पर अधिक आग्रह रहा है। इस धारा के प्रमुख कवि तुलसी और सूर हुए हैं और उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा मध्ययुगीन साहित्य का चहुँमुखी विकास किया है। सगुण भक्ति धारा को दो उपशाखाओं में विभाजित किया गया है :

क. रामभक्ति शाखा : निर्गुण और सगुण दोनों धाराओं के कवियों ने राम की उपासना की है। हिन्दी क्षेत्र के रामभक्त कवियों का सम्बन्ध रामानन्द से है। रामानन्द, राघवानन्द के शिष्य एवं रामानुजाचार्य की परम्परा के आचार्य थे। वे अत्यन्त उदार गुरु थे। सभी वर्गों के लोग उनके शिष्य थे।